भगवद् गीता का ज्ञान – (14)

" गीता का उपदेश केवल भक्तों के लिए "

श्रीमद्भगवद्गीता के अन्तिम, अर्थात 18वें, अध्याय के चार श्लोकों (श्लोक संख्या 68 से 71) में अन्य धर्म-ग्रंथों की भान्ति भगवद् गीता को पढ़ने, सुनाने तथा सुनने का फल बताया गया है।

परन्तु 67वें श्लोक में बताया गया है कि अत्यन्त गूढ़ होने के कारण भगवद् गीता का उपदेश केवल भक्त-गणों के लिए ही है, अन्य व्यक्तियों के लिए कदाचित नहीं। भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं –

इदं ते नातपस्काय नाभक्ताय कदाचन।
न चाशुश्रूषवे वाच्यं न च मां योऽभ्यसूयति ॥१८:६७॥

अर्थात - "तुझे भगवद् गीता का उपदेश, जो अत्यन्त गूढ़ है, कभी भी न तो किसी तप-रहित मनुष्य से कहना चाहिए, न भक्ति-रहित मनुष्य से और न ही ऐसे व्यक्ति से जो सुनने की इच्छा न रखता हो। जो मुझ को (ईश्वर को) दोष-दृष्टि से देखता है, उससे तो कभी नहीं कहना चाहिए।" **(गीता – 18:67)**